कृषि किरण अंक-7, जून 2019: पृष्ठ: 14-16
http://saaer.org.in

अरबी की खेती से कमाए अधिक लाभ

मुकेश नागर, लोकेश कुमार, पवन कुमार पारीक, मामराज पंचार
भाकृअनुप-केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर

अरबी की खेती पूरे भारत में की जाती है यह एक गर्मी की फसल है। यह एक उष्णकटिबंधीय पौधा है। इसे सब्जी की लिए मुख्यत उगाया जाता है। इसकी सब्जी आलू की तरह बनाई जाती है। तथा पत्तियों की भाजी और पकोड़े बनाए जाते है उबालने पर इसकी खुजलाहट समाप्त हो जाती है। कंद में प्रमुख रुप से स्टार्च होता है। इसकी पत्तियों में विटामिन ए तथा कैल्शियम, फास्फोरस और आयरन पाया जाता है। कच्चे रूप में यह पौधा जहरीला भी हो सकता है। ऐसा इसमें मौजूद कैल्सियम ऑक्जेलेट के कारण होता है।

जलवायु:

अरबी की फसल को गर्म और आर्द्र जलवायु तथा 21-27 डिग्री सेल्सियस तापक्रम की आवश्यकता होती है। यह ग्रीष्म और खरीफ दोनों मौसम में उगाई जाती है। जिन स्थानों पर औसत वार्षिक वर्षा 800-1000 मिमी. होती है। उन स्थानों पर सफलतापूर्वक इसकी खेती की जा सकती है। उत्तरी भारत की जलवायु अरबी की खेती के लिए उपयुक्त है। वैसे इसे उष्ण और उपोष्ण देशों में उगाया जा सकता है। इसे फलदार वृक्षो के साथ अन्तवर्तीय फसल के रूप में ली जा सकती है।

भूमि की तैयारी:

अरबी के लिए पर्याप्त जीवांश एवं उचित जल निकास युक्त रेतीली दोमट मिट्टी अच्छी रहती है। जिसमे कंकड़ पत्थर और कड़ी परत न हो। खेत की तैयारी के लिए एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से और तीन-चार बार देशी हल से जुताई करनी चाहिए। इसकी खेती के लिए 5.5 से 7.0 पी.एच. मान वाली भूमि उपयुक्त रहती है

बोने का समय:

इस फसल को खरीफ ऋतु में जून से 15 जुलाई में बुवाई की जाती है।

उन्नत किस्में:

अरबी की बहुत सी प्रजातीयां पाई जाती है जैसेकि सतमुखी, श्रीरश्मी, श्रीपल्लवी उन्नतशील प्रजातियाँ है इसके अलावा सफ़ेद गौरेया, काका काचू, सी.149, सी. 266, बी -250, बी -260,

बीज की मात्रा एवं बीजोपचार:

बुवाई के लिए अंकुरित कंद 8 से 10 क्विंटल प्रति हैक्टेयर की आवश्यकता होती है। बोने से पहले कंदों को कार्बेन्डाजिम 12 प्रतिशत या मेन्कोजेब 63 प्रतिशत डब्ल्यू. पी. 1 ग्राम/लीटर पानी के घोल में 10 मिनट डुबोकर उपचारित कर बुवाई करना चाहिए।

बोने की विधि:

समतल क्यारियों में कतारों से कतारों की दूरी 45 सें.मी. तथा पौधों से पौधों की दूरी 30 सें.मी. और कंदों की 5 सें.मी. की गहराई पर बुवाई करनी चाहिए।

मेड़ बनाकर 45 सें.मी. की दूरी पर मेड़ बनाकर दोनों किनारों पर 30 सें.मी. की दूरी पर कंदों की बुवाई करें। बुवाई के बाद कंद को मिट्टी से अच्छी तरह ढक देना चाहिए।

पलवार (मल्चिंग):

बुआई के बाद घास-फूस से पलवार करने पर कन्दो में जल्दी अकुरण होता है। और खरपतवार भी कम उगते है। तथा जमींन में नमी बनी रहती है जिससे सिंचाई की कम आवश्यकता होती है।

निराई-गुड़ाई:

खरपतवारों को नष्ट करने के लिए कम से कम दो बार निराई-गुड़ाई करें तथा अच्छी पैदावार के लिए दो बार हल्की गुड़ाई जरूर करें। पहली गुड़ाई बुवाई के 40 दिन बाद व दूसरी 60 दिन के बाद करें। फसल में एक बार मिट्टी चढ़ा दें। यदि तने अधिक मात्रा में निकल रहे हो, तो एक या दो मुख्य तनों को छोड़कर शेष सभी की छंटाई कर देनी चाहिए।

सिंचाई:

अरबी की पत्तियों का फैलाव ज्यादा होने के कारण वाष्पोत्सर्जन अधिक होता है। अत: प्रति इकाई पानी की आवश्यकता अन्य फसलो से अधिक होती है। जिस फसल को गर्मी के मौसम में उगाया गया हो उस फसल में सिंचाई की बहुत जरूरत होती है। गर्मियों में सिंचाई एक सप्ताह में एक बार या 10 से 12 दिन के अंतराल पर करें। जबकि खरीफ की फसल में सिंचाई की कम जरूरत होती है। खरीफ फसल में इसकी सिंचाई बारिश पर निर्भर होती है। यदि बारिश कम होती है तो इसमें आवश्कता अनुसार सिंचाई करें।

खाद एवं उर्वरको का प्रयोग:

अरबी की खेती में खाद उर्वरक की संतुलित मात्रा देनी चाहिए। इसके लिए खेत तैयार करते समय 150 से 200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर गोबर की खाद देनी चाहिए। इसके अलावा 50 किलोग्राम फास्फोरस एवं 100 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर डोलियाँ बनाने से पहले जमीन में देवें। इसके बाद प्रति हेक्टेयर 100 किलोग्राम नत्रजन दो भागों में बांटकर, कंद लगाने के एक माह बाद एवं शेष इसके एक माह बाद देवें।

कीट नियंत्रण:

सूंडी व मक्खी कीट:

अरबी की पत्तियों को खाने वाली सूंडी व मक्खी कीड़ों द्वारा हानि होती है क्योंकि यह कीट नई पत्तियों को खा जाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए प्रोफेनोफ़ांस 50 ई.सी. या साइपरमेथ्रिन 3 ई.सी. 1 मिली./लीटर या ट्रायजोफास 40 ई.सी. 2 मिली./लीटर पानी का 500 लीटर प्रति हेक्टेयर घोल बनाकर छिड़काव करें।

मिलीबग एवं स्केल कीट:

यह कीट रस चूसकर हानि पहुचाते हैं। इसके नियन्त्रण के लिए बुवाई पूर्व कंदों को डाईमिथियेट 30 ई.सी. 0.05 प्रतिशत के घोल से उपचारित करे

रोग नियंत्रण:

सकोर्स्पोरा पर्ण चित्ती (पत्ती धब्बा):

पत्तियों पर छोटे वृताकार धब्बे बनते हैं जिनके किनारे पर गहरा बैंगनी तथा मध्य भाग राख के समान होता है। परन्तु रोग की अवस्था में यह धब्बे मिलकर बड़े हो जाते हैं। जिससे पत्तियाँ सिकुड़ जाती हैं। प्रारम्भिक अवस्था में मेंकोजेब 0.3 प्रतिशत एवं क्लोरोथेलोनिल की 0.2 प्रतिशत मात्रा का छिडकाव करें।

झुलसा रोग:

झुलसा रोग से पत्तियों में काले-काले धब्बे हो जाते हैं। बाद में पत्तियां गलकर गिरने लगती हैं। इससे उपज पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसकी रोकथाम के लिए 15-20 दिन के अंतर से डाईथेन एम-45, 2.5 ग्राम/लिटर या कार्बेन्डाजिम 12 प्रतिश या मेन्कोजेब 63 प्रतिशत डब्ल्यू. पी. 2 ग्राम/लिटर पानी के घोल का छिड़काव करते रहें। साथ ही फसल चक्र अपनाएं

कंद का शुष्क सडन रोग:

यह रोग भण्डारण में कंदों को क्षति पहुचाते हैं। संक्रमित कंद भूरे, काले, सूखे सिकुड़े कम भर वाले होते हैं। तथा कंद के ऊपरी स्तर पर सूखा फफूंद चूर्ण बिखरा रहता है। बीज हेतु प्रयुक्त होने वाले कंद को 0.1 प्रतिशत मरक्यूरिक क्लोराइड या 0.5 प्रतिशत फार्मेलिन से उपचारित कर भंडारित करना चाहिए

अरबी की फसल की खुदाई:

अरबी की खुदाई कंदों के आकार, प्रजाति, जलवायु और भूमि की उर्वरा शक्ति पर निर्भर करती है। जब अरबी की फसल 130 से 140 दिन में पककर तैयार हो जाती है। अरबी फसल की पत्तियां पीली होकर जमीन पर गिरने लगती है। उस समय खुदाई करनी चाहिए।

खुदाई एवं उपज:

इसकी उपज 150 क्विंटल प्रति हैक्टेयर की दर से होती है। अच्छी कीमत मिलने के कारण इसे कैशक्राप माना जाता है।

भण्डारण:

अरबी के कंदों को हवादार कमरे में फैलाकर रखें। जहां गर्मी न हो। इसे कुछ दिनों के अंतराल में पलटते रहना चाहिए। सड़े हुए कंदों को निकालते रहें।

बीज संग्रहण कैसे करें:

पौधों की पत्तियाँ जब पूरी तरह सूखकर गिर जाएँ, तब जड़ो को क्षति पहुचाएँ बिना पौधों को जड़ो सहित उखाड़ लेना चाहिए। इसके बाद इनको ठंडी जगह सुखाकर सुरक्षित रख लें। ये अगली फसल के लिए बीज का काम करेंगे।